



प्रा फर्स्ट

RNI NO. MPHIN38290 (TC)

संपादक : ऐश्वर्य शर्मा

नीमच, बुधवार

19 मार्च 2025

वर्ष - 02, अंक - 46 - मूल्य 02 रूपए

Periodicity- Weekly

संपादक : ऐश्वर्य शर्मा
नीमच, बुधवार
19 मार्च 2025

वर्ष - 02, अंक - 46 - मूल्य 02 रूपए

E-mail: nmh.pawan@gmail.com
Contact: 9407423966, 8770664866

Commodity:	Gold 79,325	Silver 96,500	Crude Oil 5,963	Natural Gas 302.20	Aluminium 232.30	Copper 827.35
------------	-------------	---------------	-----------------	--------------------	------------------	---------------

अब नो टेंशन! समझौते से खत्म होंगे इनकम टैक्स के मुकदमे

ईडी और सीबीआई जांच कर रही तो भी मिलेगी राहत



परिजनों ने मरणोपरांत रोटरी क्लब नीमच के माध्यम से उनके नेत्रदान कराये। शवयात्रा आज 19 मार्च बुधवार को प्रातः 9 बजे निज निवास म.नं. 635, 35-ए से 36-बो स्थित मुक्तिधाम पर जायेगी।

प्रदेश में 5 साल में ढाई लाख पदों पर भर्ती, सबको जल्द प्रमोशन देंगे

लागत से बनाई है, जो टीटी नगर में होटल पलाश के ठीक सामने है। सीएम ने कैम्पस का नाम पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर रखने की घोषणा भी की।

सीएम ने बजट को लेकर कहा कि यह प्रदेश का सबसे बड़ा बजट है। प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय 1 लाख 52 हजार 680 रुपए हो गई है। भोपाल को आने वाले समय में

मेट्रोपॉलिटन सिटी बनाएंगे। अगले 25 साल बाद भोपाल की तस्वीर ही बदल जाएगी। भोपाल देश की सबसे सुंदर और स्वच्छ राजधानी है। उन्होंने, निगम कमिशनर हरद्वारायण गावड़ और स्मार्ट सिटी सीईओ अंजु अरुण कुमार को अवसर बिलडिंग का काम तीन-चार महीने में पूरा करने को कहा, ताकी उसका लोकार्पण समेत। भोपाल स्मार्ट सिटी डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने 364 जी टाइप आवसर्ग का निर्माण किया है। इन आवसर्ग का निर्माण 3 टावरों में किया गया है। हर टावर 13 मंजिल का है। जिन आवसर्गों को लोकार्पण हुआ, वे प्रथम चरण में बनाए गए हैं।

शाला हुई संपन्न

धन्यवाद ज्ञापन किया और कर्म योग के सिद्धांतों को जीवन में अपना कर हम सभी अपने कर्तव्यों को और बेहतर ढंग से निभा सकते हैं। इस कार्यशाला में कर्म योग के महत्व को उजागर किया गया और यह संदेश दिया गया कि सफलता का असली स्रोत नृत्क्रमा फल है। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कई महत्वपूर्ण शिक्षाविद शामिल हुए, जिनमें प्रमुख रूप से डॉ. विनीता डावर, डॉ. श्वेता पुरोहित, डॉ. प्रीति तिवारी, प्रो. रवि चौंसिया, प्रो. सुरेंद्र पांडे, प्रो. कपिल पाटीदार आदि शामिल थे। इस कार्यशाला का संचालन प्रो. संदीप सोनगार एवं प्रो. चंद्रकांत गोरे ने किया। उक्त जानकारी प्रो. अनूप चौधरी ने दी।

ज्ञानोदय

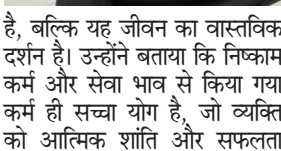
द्वारा भ्रामक प्रचार के माध्यम से उपभोक्ताओं को लूट जा रहा है, यदिहां तो तब 1 जनवरी 2020 के पश्चात् प्रवेश में इन कम्पनियों के खिलाफ कब-कब किस किस व्यक्ति ने कहां कहा प्रशिकायत दर्ज कराई। प्रदेश में भ्रामक विज्ञापनों को लेकर शासन के क्या निर्देश ? क्या प्रवेश में विभिन्न निजी बीमा कम्पनियां हेल्थ इंश्योरेंस को लेकर 100 प्रतिशत केशलेस बीमे का दावा करती हैं ? और 41 प्रतिशत तक कर्तौत करती हैं ? यदि हां तो प्रवेश में

मंत्री श्री राजपूत ने जवाब में बताया कि बीमा अधिनियम केन्द्र सरकार से जुड़ा है। किन्तु राज्य शासन के उपभोक्ताओं का हित साधना हमारी सरकार का दायित्व है और हम इसे मजबूती से पूरा करने और हमें सौख्य है।

रह ह आर करेगा।

ज्ञानोदय विश्वविद्यालय सुवाखेड़ा में 'कर्मयोगी बनो' विषय पर कार्यशाला हुई संपन्न

सुवाखेड़ा 18 मार्च (निप्र)।
ज्ञानदीप विश्वविद्यालय में
एकदिवसीय कार्यशाला 'कर्मयोगी
बनो' का आयोजन किया गया, जिसमें
छात्रों और शिक्षकों को कर्मयोग के
सिद्धांतों से अवगत कराने और उनके
जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने
का प्रयास किया गया। कार्यक्रम का
शुभारंभ विश्वविद्यालय के वासु
चांसलर डॉ. प्रशान्त शर्मा के स्वागत
भाषण से हुआ। उन्होंने कर्म योग के
महत्त्व और उसके दैनिक जीवन में
प्रभाव पर प्रकाश डाला और कहा कि
कर्मयोग हमें जीवन में सफलता प्राप्त
करने का मार्ग दिखाता है। ज्ञानदीप
विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ.
हिमंशु प्रजापति ने कहा कि कर्मयोग
केवल एक आध्यात्मिक विचार नहीं



दिला सकता है। प्रो.हेमंत प्रजापति ने इस बात पर जोर दिया कि किसी भी कार्य को पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ करना ही कर्मयोग है, और यह सिद्धांत न केवल आध्यात्मिक

बल्कि पेशेवर सफलता के लिए भी आवश्यक है। अंत में विश्वविद्यालय के रजिस्टार प्रो. हेमंत प्रजापति ने सभी अतिथियों, आयोजकों और उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त करते हुए

**अपर कलेक्टर श्रीमती गामड़ ने की
जनसुनवाई, 85 आवेदकों की सुनी समस्याएं**



निजी प्लाटों में पसर रही गंदगी जिम्मेदार जानबूझकर भी हैं अज्ञान

ऐसे में कैसे स्वच्छता की पायदान चढ़ पायेगा नीमच शहर

नीमच 18 मार्च (निप्र)।
नगरपालिका स्वच्छता के नाम पर
बडी बडी बाते करती है लेकिन
जमीनी धरातल पर हालत बदर
नजर आते है। ऐसे में कैसे नीमच
शहर स्वच्छता के उच्च पायदान
पर आ पायेगा। बात कर शहर में
निजी प्लाट मालिको के लापरवाही
की तो उनके द्वारा प्लाट लेकर
बाउण्ड्रीवाल बनाकर खाली छोड़
दिये जाते है जिससे उसका ओत
जाने वाले शौचालय व मूलाय के
उपयोग के साथ गंदी फैकने का
स्थान बना देते है जिससे आपसपस
रहने वाले लोगो का जीना दुभर हो
जाता है। जाकरीको के बाद भी
नगरपालिका के जिम्मेदार आंखें मूँद
रहे बैठते है जिससे हालात बदतर हो
रहे है। इन्दिरा नगर के पास वार्ड नं.
08 में स्थित गणेश गाईन के सामने
निजी खाली प्लाट है जिसके पंच



ज्ञानोदय

मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल में

आयुष्मान

योजना लागू

5

लाख रुपए

प्रति वर्ष, पात्र परिवार को
निःशुल्क उपचार

आयुष्मान कार्ड धारकों के निम्नलिखित
बीमारियों के उपचार **निःशुल्क**
किए जाएंगे –

- ▶ जनरल मेडिसीन
- ▶ बाल चिकित्सा प्रबंधन
- ▶ नवजात गहन शिशु इकाई
- ▶ आपातकालीन चिकित्सा
- ▶ जनरल सर्जरी
- ▶ बर्न प्रबंधन
- ▶ प्रसूति एवं स्त्री रोग
- ▶ अस्थि एवं हड्डी रोग
- ▶ गंभीर चोटें
- ▶ संक्रामक रोग

GMH
...where healing begins

आयुष्मान भारत

अब बीमार नहीं रहेगा लाचार, अंचल के
मध्य हॉस्पिटल में होगा निःशुल्क उपचार

अब उदयपुर एवं इंदौर जाने की जरूरत नहीं

सुपरस्पेशलिस्ट डॉक्टरर्स

का समूह एक ही स्थान पर उपलब्ध

ज्ञानोदय मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल

ज्ञानोदय महाविद्यालय के पीछे, कनावटी, नीमब ९6262778282

असंतुलित आर्थिक नीतियां बढ़ा रही हैं अमीरी गरीबी की खाई



योगेन्द्र योगी

आंकड़ों के अनुसार शीर्ष 10 प्रतिशत भारतीयों (10 सबसे अमीर भारतीय) के पास अब कुल नेशनल आय का 57.7 प्रतिशत हिस्सा है, जो पहले 1990 में 34 प्रतिशत था, जबकि निचले स्तर पर यह हिस्सा पहले के 22.2 प्रतिशत से घटकर 15 प्रतिशत रह गया है। इसके अलावा, 30 करोड़ लोग ऐसे हैं जिन्होंने हाल फिलहाल खर्च करना शुरू किया है। ये लोग भी अपने खर्च को लेकर बहुत सावधान हैं। खर्च करने वाला वर्ग बढ़ नहीं रहा!

देश के लगभग 100 करोड़ भारतीयों के पास इतनी आय नहीं है कि वे विवेकाधीन वस्तुओं पर कुछ भी खर्च कर सकें। अर्थात् वे किसी भी प्रकार से किसी भी वस्तु पर अतिरिक्त खर्च करने में असमर्थ हैं। लोग जरूरत के अलावा सामान या सुविधाएँ नहीं खरीद सकते। वहीं, देश के केवल 10 फीसदी लोग, अर्थात् 13-14 करोड़ लोग देश की अर्थव्यवस्था को चला रहे हैं, क्योंकि ये लोग ही सबसे ज्यादा खर्च करते हैं और देश की तरक्की में बड़ा रोल निभाते हैं। केंद्र सरकार एक तरफ देश में तरक्की का नया मॉडल पेश करते हुए विकसित भारत की तरफ बढ़ते कदमों का आंकड़ा पेश करती है, वहीं गरीबी और अमीरी की बढ़ती खाई ने इस मॉडल पर सवालिया निशान लगा दिए हैं। ब्लूम बेंचर्स की इंडस वैली की वार्षिक रिपोर्ट 2025 भारत की आर्थिक विषमता की यह तस्वीर पेश करती है। इस रिपोर्ट का सरकार द्वारा किसी तरह प्रतिवाद नहीं किए जाने से साफ जाहिर है कि देश की आर्थिक सेहत एक तरफा जा रही है। अमीरी और गरीबी की खाई का चौड़ा होना जारी है। रिपोर्ट में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि भारत का उपभोक्ता बाजार बड़े स्तर पर विस्तार नहीं कर रहा है, बल्कि एक ही जगह गहरा होता जा रहा है। इसका मतलब यह है कि भले ही अमीर लोगों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि नहीं हो रही है, लेकिन जो लोग पहले से ही अमीर हैं, वे और भी अमीर हो रहे हैं।

आंकड़ों के अनुसार शीर्ष 10 प्रतिशत भारतीयों (10 सबसे अमीर भारतीय) के पास अब कुल नेशनल आय का 57.7 प्रतिशत हिस्सा है, जो पहले 1990 में 34 प्रतिशत था, जबकि निचले स्तर पर यह हिस्सा पहले के 22.2 प्रतिशत से घटकर 15 प्रतिशत रह गया है। इसके अलावा, 30 करोड़ लोग ऐसे हैं जिन्होंने हाल फिलहाल खर्च करना शुरू किया है। ये लोग भी अपने खर्च को लेकर बहुत सावधान हैं। खर्च करने वाला वर्ग बढ़ नहीं रहा। आंकड़ों के मुताबिक 5 साल पहले रियल एस्टेट की कुल बिक्री में अपगैर्डबल हाउसिंग की हिस्सेदारी 40 प्रतिशत थी, जो अब घटकर महज 18 प्रतिशत रह गई है। इस महीने पेश हुए बजट में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मध्यम वर्ग



की जेब ढीली करने के लिए टैक्स में छूट दी। 12 लाख रुपये तक कमाई करने वालों को अब इनकम टैक्स नहीं देना होगा जिससे 92 प्रतिशत वेतनभोगी लोगों को राहत मिलेगी। इसके बावजूद भारत की खपत चीन से 13 साल पीछे है। वर्ष 2023 में भारत में प्रति व्यक्ति खर्च 1,493 डॉलर था, जबकि चीन में वर्ष 2010 में ही ये 1,597 डॉलर था। माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में भी हालात ठीक नहीं हैं। माइक्रोफाइनेंस सेक्टर में बढ़ता कर्ज का बोझ बढ़ता जा रहा है। दिसंबर 2024 तक इस सेक्टर के नॉन-परफॉर्मिंग असेट्स (एनपीए) 50,000 करोड़ रुपये तक पहुंच गया। ये अब तक का सबसे ऊंचा स्तर है और कुल लोन का 13 प्रतिशत है। अमीर-गरीब के बीच की खाई भारत में कभी छिपी नहीं रही है। यह खाई और चौड़ी हो गई है। माइक्रोफाइनेंस का मतलब है गरीब परिवारों को बिना गारंटी के लोन देना। इन परिवारों की सालाना कमाई 3 लाख रुपये से कम होती है। ज्यादातर महिलाएं इन लोन का इस्तेमाल

करती हैं। लेकिन ज्यादा लोन देने की होड़ में हालात बिगड़ गए हैं। बंधन बैंक, इंडसइंड, आईडीएफसी फर्स्ट जैसे बैंकों के एनपीए बढ़ गए हैं। बंधन बैंक के 56,120 करोड़ रुपये के लोन में से 7.3 प्रतिशत एनपीए हो चुके हैं। एनपीए वो कर्ज है जिसकी कोई भी किश्त 180 दिनों तक चुकाने में लेनदार असफल हो जाता है। इसके बाद बैंकों को इस तरह के लोन को एनपीए में डालना होता है। हालांकि इस लोन की वसूली की कोशिश जारी रहती है और कई बार ये पूरा या आंशिक तौर पर वापस मिल जाता है। आंकड़ों के मुताबिक 91 से 180 दिन का बकाया लोन कुल आउटस्टैंडिंग का 3.3 फीसदी है, जबकि 180 दिन से ज्यादा बकाया लोन 9.7 प्रतिशत है। माइक्रोफाइनेंस को लेकर अब संस्थान भी सतर्कता बरत रहे हैं। क्योंकि उन्हें एनपीए अभी और बढ़? की आशंका है। भारतीय रिजर्व बैंक ने लोन पर रिस्क वेट घटाया इसी बीच बिजनेस लोन पर जोखिम वेट 125 प्रतिशत से घटकर 75 प्रतिशत कर

दिया है, जिससे बैंकों को राहत मिलेगी। छोटे बैंकों को हो रहे नुकसान को देखते हुए इस नियम में बदलाव से इन्हें फायदा मिल सकता है। देश में बढ़ती आर्थिक असमानता की तरफ पूर्व में चेतावनी मिल चुकी है। 12 अप्रैल 2024 को पेरिस स्थित शोध संगठन वर्ल्ड इनइक्वेलिटी लैब की ओर जारी एक शोधपत्र में बताया गया था कि देश के शीर्ष एक फीसद तक के आमदनी और संपत्ति में हिस्सेदारी अपनी ऐतिहासिक ऊंचाई पर पहुंच गई है और यह दुनिया में सबसे ज्यादा है। शोधपत्र के निष्कर्षों में कहा गया है कि साल 2023 तक सबसे अमीर एक फीसद भारतीयों के पास देश की आय का 22.6 फीसद और संपत्ति का 40 फीसद हिस्सा था। इनकम एंड वेल्थ इनइक्वेलिटी इन इंडिया, 1922-2023 द राइज ऑफ बिलियनेर राज शीर्षक वाले शोधपत्र के अनुसार आजादी के बाद से 1980 के दशक की शुरुआत तक गैर-बराबरी में कमी आई थी लेकिन इसके बाद इसमें बढ़ोतरी शुरू हो गई और 2000 के दशक की शुरुआत में यह बहुत तेज गति से बढ़ी। देश के शीर्ष एक फीसद लोगों ने 2022-23 में औसतन 53 लाख रुपए कमाए, जो औसत भारतीय की आय से 23 गुना अधिक है जिसने 2.3 लाख रुपए की आय सृजित की। देश के निचले पायदान के 50 फीसद और बीच के 40 फीसद लोगों की औसत आय क्रमशः 71, 000 रु. (राष्ट्रीय औसत का 0.3 फीसद) और 1,65,000 रु. (राष्ट्रीय औसत का 0.7 फीसद) रही सबसे अमीर 9,223 लोगों (9.2 करोड़ व्यक्ति भारतीयों में से) ने औसतन 48 करोड़ रुपए कमाए (औसत भारतीय आय से 2,069 गुना)। भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के बाद निजी उद्यम में वृद्धि और पूंजी बाजार की वृद्धि ने शीर्ष के कुछ ही लोगों के हाथों में संपत्ति का सिमटना बढ़ाया है। उदारीकरण के बाद से सेवा की अगुआई में हुई आर्थिक वृद्धि के भी असमानताकारी असर हुए। इस पूरे हालात से साफ है कि भारत की खपत ग्रोथ संतुलित नहीं है। एक तरफ जहां अमीर और अमीर हो रहे हैं, वहीं गरीब और गरीब जिसके लिए आने वाले समय में सरकार को बड़े कदम उठाने होंगे जिससे आर्थिक असमानता कम हो सके।

संपादकीय

कहते तो हैं, करते नहीं

गुजरात में अपनी ही पार्टी के नेताओं पर राहुल गांधी का गुस्सा जताना कई सवाल खड़े करता है। राहुल शनिवार से दो दिवसीय गुजरात दौरे पर हैं और उन्होंने दूसरे दिन पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस के भीतर दो गुट नजर आ रहे। आधे लोग बीजेपी के लिए काम कर रहे हैं। ऐसे लोगों को हटाने की सख्त कार्रवाई करनी पड़ी तो जरूर की जानी चाहिए। ऐसा कह कर राहुल ने उन नेताओं को भी सख्त संदेश देने की कोशिश की है जो हमेशा पार्टी हित के खिलाफ काम करते हैं, और पार्टी को गत में पहुंचाने में उनकी महती भूमिका है। दरअसल, राहुल गांधी का गुस्सा जायज है। पार्टी करीब 30 साल से गुजरात में सत्ता से उबरने में नहीं सके। उसके बीजेपी का और का साथ छोड़ कर भाजपा का दामन थाम चुके हैं। पिछली बार (2022) के चुनाव में भाजपा ने जहां 156 सीट जीत कर अपना बेहतरीन प्रदर्शन किया था, वहीं कांग्रेस को महज 17 सीटों पर जीत हासिल हुई थी। गौरतलब है कि साल 2027 में वहां विधानसभा के चुनाव होंगे। राहुल उसी के मद्देनजर दांव चल रहे हैं। यह मंशा उनके इस बयान से भी जुड़ती दिखती है, जब वो यह कहते हैं, 'यहां विपक्ष के पास 40 फीसद वोट हैं। यहां विपक्ष छोटा नहीं है। अगर गुजरात के किसी भी कोने में दो लोगों को आप खड़ा कर देंगे तो उनमें से एक बीजेपी का और दूसरा कांग्रेस का निकलेगा यानी दो में से एक हमारा, एक उनका होगा।' लेकिन हमारे मन में है कि कांग्रेस के पास दम नहीं है। अगर गुजरात में हमारा वोट पांच फीसद बढ़ जाएगा तो आप (बीजेपी) वहीं खत्म हो जाओगे।' हालांकि, उनका ऐसा कहना पूरी तरह से सही भी नहीं कहा जा सकता है। पिछले साल संपन्न महाराष्ट्र, हरियाणा के चुनाव में पार्टी के अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद थी, लेकिन दोनों ही जगह उन्हें हार का सामना करना पड़ा। मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, पंजाब, बिहार, बंगाल सभी जगहों पर पार्टी कई गुटों में बंटी नजर आती है। इस वजह से उनका प्रदर्शन उम्मीद के मुताबिक नजर नहीं आता। पार्टी में इस गुटबाजी से निपटने के लिए कांग्रेस नेतृत्व में कई बार मंथन हुआ। उदयपुर के चिंतन शिविर में इसे लेकर राज्य स्तर पर प्रदेश समन्वय कमेटी बनाने का फैसला किया गया था। हालांकि, इस पर कितना अमल हुआ यह पार्टी नेतृत्व को भी बखूबी पता है। दूसरी अहम बात यह कि आला कमान के स्तर पर भी अपने-अपने गुट हैं। राहुल गांधी का अलग तो प्रियंका का अलग। ऐसे में सिर्फ नेताओं को दोषी ठहराना न्यायसंगत नहीं है।

सूक्ति

दुःख का कारण हमारी वित्तवृत्तियों का प्रभाव ही है।

- भगवान श्री कृष्ण

कर्म की उत्पत्ति विचार में है, अतः विचार ही महत्वपूर्ण है।

- साईं बाबा

चिंतन-मनन

इसलिए रह जाती है पूर्व जन्म की स्मृतियां

माना जाता है कि संसार में हम जो भी काम करते अथवा बोलते हैं वह एक उर्जा के रूप में प्रकृति में वर्तमान रहती है। उर्जा के विषय में विज्ञान कहता है कि उर्जा कभी नष्ट नहीं होती है। इसका स्वरूप बदलता रहता है। हमारी आत्मा भी उर्जा का ही स्रोत है इसलिए कभी मनुष्य शरीर में रहती है तो कभी पशु, कीट की योनी में जाकर रहती है। लेकिन अपनी आत्मा को हम किस रूप में स्थान देना चाहते हैं यह हमारे अपने हाथ में है। जिस प्रकार उर्जा को कर्म के अनुसार रूपांतरित किया जा सकता है ठीक उसी प्रकार कर्म के अनुसार आत्मा को भी रूप दिया जा सकता है। पुराणों में बताया गया है कि आत्मा का वही रूप होता है जैसे शरीर में वह विराजमान होता है। वर्तमान जन्म में हम जो अच्छे या बुरे कर्म करते हैं उसके अनुरूप आत्मा दूसरा शरीर ग्रहण करती है। आत्मा अपने साथ पूर्व जन्म की स्मृति और आकांक्षाओं को भी साथ में लेकर दूसरे शरीर में प्रवेश करती है। शरीर बदलने के बाद भी आत्मा पुराने शरीर की स्मृतियों को नहीं भूलती है। इस तथ्य को परामर्शवैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं। मरने के समय जिनकी आत्मा अतृप्त रहती है और पूर्व जन्म कार्यों को पूरा करने के लिए छटपटाती रहती है। ऐसे लोगों को अपने पूर्व जन्म की कई बातों की स्मृति रहती है। पुराणों में पार्वती के पूर्व जन्म की कथाओं का उल्लेख मिलता है। कथाओं में बताया गया है कि पार्वती को पूर्व जन्म में प्रजापति दक्ष की पुत्र के रूप में जन्म लेकर शिव से विवाह और अग्नि कुण्ड में भस्म होने की घटना का स्मरण था। शिव को फिर से पति रूप में पाने के लिए ही सती ने पार्वती के रूप में जन्म लिया और कठोर तपस्या किया। पुराणों और शास्त्रों में कई ऐसी कथाओं का जिक्र किया गया है जिसमें व्यक्ति को अपने पूर्व जन्म की घटनाओं की स्मृति रही। जित्तूवाहन व्रत में भी इसी तरह की एक कथा का उल्लेख मिलता है।



रमेश सर्राफ धमोरा

राजस्थान के सीकर जिले में स्थित खाटू श्याम मंदिर बाबा श्याम जी के लिए प्रसिद्ध है। यह मंदिर भारत के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में गिना जाता है। खाटू श्याम जी को भगवान श्रीकृष्ण का कलियुगी अवतार माना जाता है। दानशीला के कारण बर्बरीक ने बिना किसी सवाल के अपना शीश भगवान श्री कृष्ण को दान दे दिया। इसी दानशीला के कारण श्री कृष्ण ने कहा कि तुम कल्युग में मेरे नाम से पूजे जाओगे। तुम कल्युग का अवतार कहलाओगे और हारे का सहारा बनोगे। इसलिए उन्हें हारे का सहारा भी कहा जाता है। खाटू श्याम जी के मंदिर में दर्शन के लिए हर दिन लाखों भक्त आते हैं। यहां फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को श्याम बाबा का विशाल वार्षिक मेला भरता है। जिसमें देश-विदेशों से आये करीबन 30 लाख श्रद्धालु शामिल होते हैं। खाटू श्याम का मेला राजस्थान के बड़े मेलों में से एक है। इस मंदिर में भीम के पौत्र और घटोत्कच के पुत्र बर्बरीक की श्याम यानी कृष्ण के रूप में पूजा की जाती है। इस मंदिर के लिए कहा जाता है कि जो भी इस मंदिर में जाता है उन्हें श्याम बाबा का नित नया रूप देखने को मिलता है। कई लोगों को तो इस विग्रह में कई बदलाव भी नजर आते हैं। कभी मोटा तो कभी दुबला। कभी हंस्ता हुआ तो कभी ऐसा तेज भरा कि नजरे भी नहीं टिक पातीं। श्याम बाबा का धड़ से अलग शीश और धनुष पर तीन वाण की छवि वाली मूर्ति यहां स्थापित की गई। कहते हैं कि मन्दिर की स्थापना महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद स्वयं भगवान कृष्ण ने अपने हाथों की थी। श्याम बाबा की कहानी महाभारत काल से आरम्भ होती है। वे पहले बर्बरीक के नाम से जाने जाते थे



अभिषेक गुप्ता

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ)- 10 मार्च, 1969 को स्थापित भारतीय सुरक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। इस बल का उद्देश्य देश के महत्वपूर्ण औद्योगिक प्रतिष्ठानों, हवाई अड्डों, परमाणु संयंत्रों, मेट्रो स्टेशनों और अन्य राष्ट्रीय परिसरों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। अत्याधुनिक तकनीक, कठोर प्रशिक्षण और अनुशासन के साथ सीआईएसएफ देश की सुरक्षा को अभेद्य बना रहा है। सीआईएसएफ की विशेषज्ञता औद्योगिक सुरक्षा तक सीमित नहीं है। यह बल देश के 66 से अधिक हवाई अड्डों, परमाणु संयंत्रों, अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्रों, मेट्रो नेटवर्क और सरकारी प्रतिष्ठानों की सुरक्षा करता है। इसके अलावा, सीआईएसएफ महत्वपूर्ण सरकारी और निजी क्षेत्र के औद्योगिक प्रतिष्ठानों की सुरक्षा में भी तैनात है, जिसमें इस्पात संयंत्र, तेल रिफाइनरियां, बंदरगाह, जल विद्युत और थर्मल पावर प्लांट शामिल

मेले पर विशेष : हारे का सहारा हैं खाटू के श्री श्याम

तथा भीम के पुत्र घटोत्कच और नाग कन्या अहिलवती के पुत्र थे। बाल्यकाल से ही वे बहुत वीर और महान योद्धा थे। उन्होंने युद्ध कला अपनी मां से सीखी। भगवान शिव की घोर तपस्या करके उन्हें प्रसन्न किया और उनसे तीन अभेद्य बाण प्राप्त कर तीन बाणधारी के नाम से प्रसिद्ध हुये। अग्नि देव ने प्रसन्न होकर उन्हें धनुष प्रदान किया जो उन्हें तीनों लोकों में विजयी बनाने में समर्थ थे। कौरवों और पाण्डवों के मध्य महाभारत युद्ध का समाचार बर्बरीक को प्राप्त हुआ तो उनकी भी युद्ध में सम्मिलित होने की इच्छा जागृत हुथी। जब वे अपनी मां से आशीर्वाद प्राप्त करने पहुंचे तब मां को हारे हुये पक्ष का साथ देने का वचन दिया। महाभारत के युद्ध में भाग लेने के लिये वे अपने नीले रंग के घोड़े पर सवार होकर धनुष व तीन बाणों के साथ कुरुक्षेत्र की रणभूमि की ओर अग्रसर हुये। भगवान कृष्ण ने ब्राह्मण वेश धारण कर बर्बरीक से परिचित होने के लिये उसे रोका और यह जानकर उनकी हंसी भी उड़यी कि वह मात्र तीन बाण से युद्ध में सम्मिलित होने आया है। ऐसा सुनने पर बर्बरीक ने उत्तर दिया कि मात्र एक बाण शत्रु सेना को ध्वस्त करने के लिये पर्याप्त है और ऐसा करने के बाद बाण वापस तरकस में ही आयेगा। यदि उन्होंने तीनों बाणों को प्रयोग में ले लिया गया तो तीनों लोकों में हाहाकार मच जायेगा। इस पर कृष्ण ने उन्हें चुनौती दी की इस पीपल के पेड के सभी पत्रों को छेद कर दिखालाऊं। जिसके नीचे दोनों खड़े थे। बर्बरीक ने चुनौती स्वीकार की और अपने तुणौर से एक बाण निकाला और ईश्वर को स्मरण कर बाण पेड़ के पत्ते की ओर चलावा।

तीर ने क्षण भर में पेड के सभी पत्तों को भेद दिया और कृष्ण के पैर के इर्द-गिर्द चक्कर लगाने लगा। क्योंकि एक पत्ता उन्होंने अपने पैर के नीचे छुपा लिया था। तब बर्बरीक ने कृष्ण से कहा कि आप अपने पैर को हटा लीजिये वरना ये आपके पैर को ओट पहेंडा देगा। कृष्ण ने बालक बर्बरीक से पूछा कि वह युद्ध में किस ओर से सम्मिलित होगा तो बर्बरीक ने अपनी मां को दिये वचन दोहराते हुये कहा कि वह युद्ध में निर्बल और हार की ओर अग्रसर पक्ष की तरफ से भाग लेगा। कृष्ण जानते थे कि युद्ध में हार तो कौरवों की ही निश्चित है। अगर बर्बरीक ने उनका साथ दिया तो

परिणाम उनके पक्ष में ही होगा। ब्राह्मण बने कृष्ण ने बालक बर्बरीक से दान की अभिलाषा व्यक्त की। इस पर वीर बर्बरीक ने उन्हें वचन दिया कि अगर वो उनकी अभिलाषा पूर्ण करने में समर्थ होगा तो अवश्य करेगा। कृष्ण ने उनसे शीश का दान मांगा। बालक बर्बरीक क्षण भर के लिये चकरा गया परन्तु उसने अपने वचन की दृढ़ता जतायी। बालक बर्बरीक ने ब्राह्मण से अपने वास्तविक रूप में आने की प्रार्थना की और कृष्ण के बारे में सुन कर बालक ने उनके विराट रूप के दर्शन की अभिलाषा व्यक्त की। तब कृष्ण ने उन्हें अपना विराट रूप दिखावा। उन्होंने बर्बरीक को समझाया कि युद्ध आरम्भ होने से पहले युद्धभूमि की पूजा के लिये एक वीर क्षत्रिय के शीश के दान की आवश्यकता होती है। उन्होंने बर्बरीक को युद्ध में सबसे बड़े वीर की उपाधि से अलंकृत कर उनका शीश दान में मांगा। बर्बरीक ने उनसे प्रार्थना की कि वह अंत तक युद्ध देखना चाहता है। श्री कृष्ण ने उनकी यह बात स्वीकार कर ली। फाल्गुन माह की द्वादशी को उन्होंने अपने शीश का दान दिया। उनका सिर युद्धभूमि के समीप ही एक पहाड़ी पर सुशोभित किया गया जहां से बर्बरीक सम्पूर्ण युद्ध का जायजा ले सकते थे। युद्ध की समाप्ति पर पांडवों में ही आपसी खींचाव हुआ कि युद्ध में विजय का श्रेय किसको जाता है। इस पर कृष्ण ने उन्हें सुझाव दिया कि बर्बरीक का शीश सम्पूर्ण युद्ध का साक्षी है। उससे बेहतर निर्णायक भला कौन हो सकता है। सभी इस बात से सहमत हो गये। बर्बरीक के शीश ने उत्तर दिया कि कृष्ण ही युद्ध में विजय प्राप्त कराने में सबसे महान पात्र हैं। उनकी शिक्षा, उनकी उपस्थिति, उनकी युद्धनीति ही निर्णायक थी। उन्हें युद्धभूमि में सिर्फ उनका सुदर्शन चक्र घूमता हुआ दिखायी दे रहा था जो कि शत्रु सेना को काट रहा था। महाकाली दुर्गा कृष्ण के आदेश पर शत्रु सेना के रक्त से भरे प्यालों का सेवन कर रही थी। कृष्ण वीर बर्बरीक के महान बलिदान से काफी प्रसन्न हुये और वरदान दिया कि कलियुग में तुम श्याम नाम से जाने जाओगे, क्योंकि कलियुग में हारे हुये का साथ देने वाला ही श्याम नाम धारण करने में समर्थ होगा। ऐसा माना जाता है कि एक बार एक गाय उस स्थान पर आकर अपने स्तनों से दुग्ध की धारा स्वतः ही बहा रही थी बाद में खुदायी के बाद



वह शीश प्रकट हुआ।

एक बार खाटू के राजा को स्वप्न में मन्दिर निर्माण के लिये और वह शीश मन्दिर में सुशोभित करने के लिये प्रेरित किया गया। तदन्तर उस स्थान पर मन्दिर का निर्माण किया गया और कार्तिक माह की एकादशी को शीश मन्दिर में सुशोभित किया गया, जिसे बाबा श्याम के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है। मूल मंदिर 1027 ई. में रूपसिंह चैचीहान और उनकी पत्नी नर्मदा कंवर द्वारा बनाया गया था। मारवाड़ के शासक ठाकुर के दीवान अभय सिंह ने ठाकुर के निर्देश पर 1720 ई. में मंदिर की जीर्णोद्धार कराया। मंदिर इस समय अपने वर्तमान आकार ले लिया और मूर्ति गर्भगृह में प्रतिष्ठापित किया गया था। मूर्ति दुर्लभ पत्थर से बनी है। प्रशासन यहां की व्यवस्था को लेकर पूरा सजग है। जिला प्रशासन व मंदिर प्रबंध कमेटी ने मिलकर खाटू श्याम मंदिर परिक्षेत्र में कई नई सुविधाओं को प्रारंभ किया है। यहां के आम रास्तों को 40 फीट तक चौड़ा किया गया है। मंदिर में दर्शन करने की व्यवस्था में भी आमूलचूल परिवर्तन किया गया है। इससे मंदिर में दर्शन करने आने वाले श्रद्धालुओं को काफी सुविधा हो रही है। सरकार ने यहां के मंदिर परिसर क्षेत्र के विकास की घोषणा की है। जिसका लाभ भी श्रद्धालुओं को ही मिलेगा। (लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

सीआईएसएफ : सुरक्षा व्यवस्था का अहम स्तंभ

हैं। सीआईएसएफ का डॉग स्क्वाड दुनिया के सबसे उन्नत सुरक्षा बलों में माना जाता है। यह विस्फोटकों और अन्य सदिग्ध सामग्रियों की पहचान में अत्यधिक कुशल है। साथ ही, सीआईएसएफ स्मार्ट सर्विलांस सिस्टम, बायोमेट्रिक सिस्टम, बाॅडी स्कैनर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग करता है, जिससे किसी भी खतरे का प्रभावी ढंग से मुकाबला किया जा सकता है। सीआईएसएफ न केवल सुरक्षा का प्रतीक है, बल्कि महिला सशक्तिकरण का भी महत्वपूर्ण उदाहरण बन चुका है। इस बल में 7% से अधिक महिलाएं कार्यरत हैं, जो इसे केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों सीपीएफ में महिला भागीदारी के मामले में अग्रणी बनाता है। 2024 के गणतंत्र दिवस पर पहली बार सीआईएसएफ की महिला बैंड टुकड़ी और महिला कमांडो टुकड़ी ने कर्तव्य पथ पर मार्च किया। इस ऐतिहासिक परेड का नेतृत्व असिस्टेंट कमांडेंट तन्मयी मोहंती ने किया था। इस प्रदर्शन ने प्रमाणित किया कि महिलाएं भारतीय सुरक्षा बलों में पुरुषों के समान योगदान देने में पूरी तरह सक्षम हैं। इसके अतिरिक्त, नवम्बर, 2024 में गृह मंत्रालय ने सीआईएसएफ की पहली द्वाआल-वुमेन बटालियन का स्थापना को मंजूरी दी। इसमें 1,025 महिला कमांडो शामिल हुईं जिन्हें हवाई अड्डों, मेट्रो स्टेशनों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों, वीआईपी सुरक्षा में तैनात किया जाएगा। सीआईएसएफ का विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम इसे अन्य सुरक्षा एजेंसियों से अलग बनाता है। इसमें जनवरी को क्राउड कंट्रोल, एंटी-टेरर ऑपरेशंस, बायोमेट्रिक

सिक्योरिटी, साइबर सुरक्षा, और उच्चस्तरीय खुफिया विश्लेषण का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रशिक्षण का केंद्र राष्ट्रीय औद्योगिक सुरक्षा अकादमी है, जो हैदराबाद में है। यह अकादमी भारत ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सुरक्षा एजेंसियों को प्रशिक्षण देने के लिए प्रसिद्ध है। सीआईएसएफ आपदा प्रबंधन और आपातकालीन सेवाओं में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कोविड-19 महामारी के दौरान,सीआईएसएफकर्मियों ने लॉकडाउन के समय हवाई अड्डों और सार्वजनिक स्थलों की सुरक्षा सुनिश्चित की है। सीआईएसएफ की दक्षता भारत तक सीमित नहीं है। संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों के तहत सीआईएसएफ के अधिकारी कई अंतरराष्ट्रीय अभियानों में शामिल रहे हैं। इसके अलावा, सीआईएसएफ भारत के पर्यटन स्थलों की सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ताजमहल, कुतुब मीनार, और अन्य ऐतिहासिक स्थलों की सुरक्षा सीआईएसएफ के अधीन है, जिससे पर्यटकों को सुरक्षित और संरक्षित माहौल मिलता है। 20 मई, 2024 से सीआईएसएफ को संसद भवन की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी सौंपी गई। पहले यह कार्य केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल सीआरपीएफ द्वारा किया जाता था। सीआईएसएफ की औद्योगिक सुरक्षा और आतंकवाद विरोधी अभियानों में विशेषज्ञता को देखते हुए यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गई। सीआईएसएफ ने स्मार्ट सर्विलांस सिस्टम, बायोमेट्रिक एक्सेस कंट्रोल, बम-डिटैक्शन यूनिट और अन्य सुरक्षा उपाय अपना कर संसद भवन की सुरक्षा को अधिक अभेद्य बनाया है।



सीआईएसएफ एक सुरक्षा एजेंसी नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय संपत्तियों और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए निर्णर विकसित हो रहा बल है। इसकी कड़ी ट्रेनिंग, अत्याधुनिक तकनीक और अनुशासन इसे दुनिया के सबसे प्रभावी सुरक्षा बलों में से एक बनाते हैं। सीआईएसएफ का स्थापना दिवस बलिदान, अनुशासन और उत्कृष्टता का सम्मान करने का अवसर है। यह संगठन नई ऊंचाइयों छू रहा है, देश की सुरक्षा को अधिक मजबूत बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। हमें संकल्प लेना चाहिए कि इस गौरवशाली बल को और अधिक सशक्त बनाने के लिए हर संभव समर्थन देंगे। राष्ट्र की रक्षा में तत्पर सीआईएसएफ के हर कर्मी को हमारा नमन।



एक ही प्रोफेशन में है लाइफ पार्टनर तो आपके काम आएंगे ये टिप्स

सलाह देना

ऑफिस में एक-दूसरे होने पर भी पार्टनर की सक्सेस को एन्जॉय करें। एक-दूसरे को मिली छोटी से छोटी उपलब्धि का जश्न मनाएं। ऐसे में आपके बीच का प्यार और भी बढ़ता है।

वीकेंड को एन्जॉय करना

ऑफिस से मिली छुट्टी को वेस्ट करने की बजाएं साथ में समय बिताएं। कहीं घूमने चले जाएं या घर पर ही एक-दूसरे से बात करें। इससे आप अपने मन की बात बता और पार्टनर के मन की बात जान सकते हैं।

साथ में खाना

घर हो या ऑफिस हमेशा पार्टनर के साथ ही खाना खाएं। साथ बैठ कर खाना खाने से आपका रिश्ते और भी ज्यादा गहरा होगा और इससे आप दोनों के बीच में प्यार भी बढ़ेगा।



ऑफिस का काम

सबसे पहले तो आप इस बात का ध्यान रखें कि ऑफिस के काम को घर पर न लाएं। ऐसा करने से आपकी लव लाइफ खरीब हो सकती है। चाहे कितना भी जरूरी काम क्यों न हो इसे ऑफिस तक ही रखें।

रोमांटिक डेट प्लान

अक्सर साथ-साथ काम करते-करते पार्टनर एक-दूसरे को डेट करना छोड़ देते हैं लेकिन ऐसा करने से आप अपना रिश्ता खुद तोड़ रहे हैं। साथ काम करने के बावजूद भी डेटिंग न छोड़ें। इससे एक-दूसरे पर प्यार और विश्वास बना रहता है।

आजकल के इस एडवांस समय में लोगों को सोशल मीडिया पर भी एक-दूसरे से प्यार हो जाता है। वहीं कुछ लोग साथ काम करते-करते एक-दूसरे को दिल दे बैठते हैं। इस माई न टाइम में कई लोग ऐसे हैं जो कॉलीग भी हैं और कपल भी। ऐसी लाइफ के फायदे होने के साथ-साथ कई नुकसान भी हैं। कई बार प्रोफेशनल और प्रसनल लाइफ मक्स होने के कारण रिश्ते में दूरियां आने लगती हैं। कई बार ऑफिस का प्रेशर और काम की झिंझक प्रसनल लाइफ पर हावी हो ही जाती है। ऐसे में आज हम आपको बताएंगे कि किस तरह प्रोफेशनल लाइफ अलग रख कर आप अपनी प्रसनल लाइफ को एन्जॉय कर सकते हैं।



शिशु में जुकाम और बंद नाक की समस्या होना एक आम बात है। इस मौसम में शिशु को इन्फेक्शन और जुकाम का खतरा सबसे ज्यादा होता है। बड़े तो जुकाम होने पर बंद नाक की समस्या को झेल लेते हैं लेकिन बच्चों को इसके कारण काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

बंद हो जाए शिशु की नाक तो इन घरेलू तरीकों से करें इलाज

वैसे तो शिशु में सर्दी-जुकाम की समस्या को कुछ घरेलू तरीकों से दूर किया जा सकता है लेकिन कई दिनों तक ठीक न होने पर आपको तुरंत डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए। आइए जानते हैं शिशु में नाक बंद होने के लक्षण और उसे पहचान दूर करने के घरेलू उपाय।

कैसे जानें कि शिशु के नाक बंद हैं?

शिशु की नाक बंद होने पर उनके सांस लेते समय घरघराहट की आवाज निकलती है। इसके अलावा सर्दी-जुकाम होने पर नाक

बहना, सांस लेने में तकलीफ, दूध पीने में प्रॉब्लम और नाक लाल होने जैसी समस्याएं होती हैं।
● नाक बंद होने के कारण
● एलर्जी
● इन्फेक्शन
● शरीर में बैक्टीरिया के कारण
● ठंड लगने के कारण
● साइनस इन्फेक्शन के कारण
अपनाएं ये घरेलू तरीके -
सरसों का तेल
शिशु को जुकाम होने पर उनकी नाक में सरसों के तेल की 2 बूंद डालें। इससे जुकाम भी ठीक हो जाएगा और उन्हें सांस लेने में तकलीफ भी नहीं होगी।

भाप देना

सर्दी जुकाम होने पर शिशु को नहाने की बजाए स्पंज स्नान कराएं। इसके अलावा सर्दी-जुकाम को दूर भगाने के लिए उन्हें भाप जरूर दिलावाएं।

नारियल तेल

शिशु की नाक बंद हो जाए, तो आप नारियल तेल को हल्का गर्म करके नाक में डाल दें। कुछ ही देर में शिशु की बंद नाक खुल जाएगी।

नींबू

4 नींबू के रस, छिलके और 1 चम्मच अदरक को फांकें। इसमें पानी डालकर कुछ देर भिगो दें। इसके बाद इसमें उसी मात्रा में गर्म पानी और

शहद मिस करके शिशु को पीलाएं।

अदरक

6 कप पानी में 1/2 कप बारिक अदरक, 2 छोटी दालचीनी को डालकर 20 मिनट तक पकाएं। इसे छानकर चीनी और शहद मिस करके बच्चे को पिला दें। एक वर्ष से कम आयु के बच्चों को यह मिश्रण बराबर मात्रा में गर्म-पानी मिलाकर पिलाएं।

संतरें

संतरा इम्यून सिस्टम को बढ़ाकर खांसी, गले में दर्द और नाक बहने की समस्या को दूर करता है। छोटे बच्चों को आप चम्मच की मदद से संतरे का रस भी पिला सकते हैं।



शादीशुदा जिंदगी को खुशहाल बनाने के लिए अपनाएं ये तरीके

लड़का-लड़की दोनों अपनी शादी को सफल बनाने के लिए बहुत कुछ करते हैं, अक्सर देखा जाता है कि शादी के शुरुआती कुछ महीने सब ठीक रहता है पर जैसे-जैसे समय गुजरता जाता है जिंदगी बहुत बोरिंग हो जाती है। रिश्ते में पहले जैसी खुशी, उत्साह और प्यार न जाने कहाँ खो जाता है। एक रिश्ते को सफल बनाने के लिए जितना विश्वास जरूरी है उतना ही एक-दूसरे के साथ टाइम बिताना भी जरूरी होता है लेकिन आजकल लड़का और लड़की दोनों ही काम करते हैं जिसके कारण वह एक-दूसरे को टाइम नहीं दे पाते। इससे कई बार रिश्ते में दूरियां आने लगती हैं। आज हम आप कुछ ऐसे तरीके बताएंगे जिनको अपनाकर आप अपने रिश्ते में पहले जैसा प्यार दोबारा जगा सकते हैं। तो आइए जानते हैं तरीकों को बारे में।

आई लव यू कहना

कई बार आप सोचते हैं कि शादी को इतना टाइम हो गया अब अपने पार्टनर को आई लव यू बोलने से क्या होगा। यह सब काम तो बच्चे और न्यूली मैरिड कपल करते हैं पर ऐसा नहीं जब आप अपने पार्टनर को अपना प्यार दिखाओगे तो वह बहुत खुश हो जाएंगे। अपनी शादी को खुशहाल बनाने के लिए

रोजाना सुबह उठकर आई लव यू कहें। इससे धीरे-धीरे आपके रिश्ते में आई खटास दूर हो सकती है।

डेट पर चलने के लिए कहें

अक्सर शादी से पहले लड़का और लड़की दोनों एक-दूसरे के साथ समय बिताने के बहाने ढंढूते रहते हैं लेकिन शादी बाद एक-दूसरे के साथ टाइम स्पेंड नहीं कर पाते जिससे कई बार रिश्ते खराब होने लगते हैं। अपनी शादी में फिर से वही प्यार लाने के लिए अपने पार्टनर के साथ डेट पर जाएं।

गिफ्ट्स देना

पति और पत्नी दोनों को एक-दूसरे को गिफ्ट्स देना चाहिए। चाहे कोई खास दिन हो या न अगर आप अपने पार्टनर को सरप्राइज देंगे तो बहुत खुश हो जाएंगे।

अतीत की बातें

अतीत की अच्छी बातें करें जैसे कब मिले थे, पहला गिफ्ट क्या था, कब आई लव यू बोला जैसी बातें करें कभी पार्ट की ऐसी बातें न करें जिससे दूसरे को कोई परेशानी हो। दूसरे के इमोशन को ध्यान में रखकर बात करने से शादीशुदा जिंदगी खुशहाल हो सकती है।



शिशु काफी नाजुक होते हैं, इसलिए उनकी देखभाल करते समय काफी सावधानियां बरतनी पड़ती हैं। शिशु को स्तनपान बंद करने बाद अन्य चीजों की आदत डालते समय मां को अक्सर परेशानी का सामना करना पड़ता है। कई बार तो महिलाओं को समझ भी नहीं आता कि शिशु को किन चीजों का सेवन करवाएं।



ब्रेस्टफीडिंग बंद करने के बाद शिशु को जरूर कराएं इन चीजों का सेवन

स्तनपान बंद करवाने के बाद बहुत जरूरी है कि शिशु ऐसी हेल्दी चीजों का सेवन करें जो उसे स्वस्थ बनाएं रखें। आज हम आपको ऐसे ही कुछ फूड के बारे में बताने जा रहे हैं जिन्हें आप स्तनपान बंद करवाने के बाद शिशु को दे सकती हैं। इनसे बच्चों की सेहत भी बन जाएगी और वो इसे आसानी से खा भी लेंगे।

हरी सब्जियां

शिशु को स्तनपान बंद करवाने के बाद आप उन्हें हरी सब्जियां जरूर खाने के लिए दें। मटर, पालक, गाजर, चुकंदर आदि को उबालकर मेश करके उसमें स्वादानुसार नमक मिला दें। इसे बच्चे आसानी से का भी लेंगे और उन्हें सब्जियां खाने की आदत भी पड़ जाएगी।

डेयरी प्रोडक्ट

जब शिशु स्तनपान छोड़ता है तो उसे पर्याप्त मात्रा पोषण की जरूरत होती है। ऐसे में आप उन्हें डेयरी प्रोडक्ट्स भी दे सकती हैं। पनीर या दूध में मौजूद

कैल्शियम शिशु को स्वस्थ रखते हैं।

फल

आप शिशु को सीजनल फल भी खाने के लिए दे सकती हैं। सेब, संतर, केले, आम या किसी भी फल से शिशु को पर्याप्त मात्रा में फाइबर और मिनरल्स मिल जाएंगे।

जूस

कई बार शिशु फल खाना पसंद नहीं करते या फिर उन्हें इसे चबाने में असुविधा होती है। ऐसे में आप उन्हें फल की बजाए उनका जूस दे सकती हैं। इसे वो पसंद भी करेंगे और उनके शरीर को जरूरी मिनरल्स भी मिल जाएंगे।

सूप

आप शिशु को सब्जियों का सूप बनाकर भी दे सकती हैं। इससे ना केवल उनको पोषण मिलेगा बल्कि उनके शरीर में पानी की कमी नहीं होगी।



बच्चों को सिखाएं टेबल मैनेर्स

बैठ कर खाने की आदत डालें

छोटे बच्चों के लिए एक जगह पर बैठना बहुत मुश्किल होता है। डाइनिंग टेबल पर खाना खाने के लिए बच्चों को साथ बिठा रहे हैं तो इस बात का ख्याल रखें कि उनकी कुर्सी आरामदायक हो। कुर्सी की ऊंचाई बच्चे की हाइट के मुताबिक हो, जिससे वह आराम से बैठ सकें।

सही तरीके से खिलाएं खाना

आप मेहमानों के साथ बैठ कर खाना खा रहे हैं तो बच्चों को

नजरअंदाज न करें। बच्चों को बिना आवाज के खाना खाना सिखाएं। ज्यादा मुंह भरकर खाना न खिलाएं, निवाला सिर्फ उतना ही डालें, जितना वह आराम से खा सके। इसके अलावा प्लेट भर कर खाना न डालें, दोबारा जरूरत पड़ने पर खाना दोबारा सर्व करें।

बर्तनों का सही इस्तेमाल

डाइनिंग टेबल पर बैठते समय बच्चे को इस बात की जानकारी जरूर दें कि कौन सा बर्तन किस तरीके से इस्तेमाल करना है। बड़े चम्मच को सूप और कटोरी का

बच्चे की पहली पाठशाला उसका घर होता है और पहली टीचर उसकी मां। बच्चे जरा सी भी गलती करें तो सबसे पहले यही बात सुनने के मिलती है कि बच्चे घर में कुछ नहीं सिखाया गया। पढ़ाई के साथ-साथ कुछ बुनियादी शिष्टाचार सिखाने भी बच्चों को बहुत जरूरी है। इन्हीं में से एक है टेबल मैनेर्स यानी दूसरों के साथ बैठकर किस तरह से खाना खाना है और कैसा व्यवहार करना जरूरी है। इससे बच्चे के साथ-साथ आपके व्यक्तित्व की भी पहचान होती है।

इस्तेमाल ग्रेवी वाली सब्जी के लिए किया जाता है। खाना खाने के बाद बर्तन सिंक में रखना बच्चे को शुरू से ही यह आदत डालें कि घर अपना हो या किसी और का, खाना खत्म हो जाने के बाद हमेशा प्लेट को सिंक में रखें।

तारीफ भी करें

अपने बच्चे में इस बात की आदत भी डालें कि खाने के बाद खाना बनाने वाले की तारीफ भी करें।



सरकारी स्कूलों से बच्चों का मोहभंग

मप्र में शिक्षा का बजट बढ़ा लेकिन बच्चे घट गए

भोपाल 18 मार्च (एजेंसी)। मप्र में शिक्षा का बजट तो बढ़ा है, किंतु बच्चे घट गए हैं। यह भी कह सकते हैं कि सरकारी स्कूलों से बच्चों का मोहभंग हो रहा है। आलम यह है कि प्रदेश में 26 लाख बच्चे कम हो गए। पिछले 10 साल में सरकारी स्कूलों में कक्षा पहली से आठवीं तक के 21 लाख बच्चे घटे हैं। इसी तरह निजी स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों में भी 5 लाख विद्यार्थी भी स्कूल छोड़कर चले गए हैं। इसके पहले भी स्कूल शिक्षा विभाग की रिपोर्ट में यह आंकड़े सामने आने के बाद भी विभाग के अफसरों के कानों में जू तक नहीं रंगी।

वहीं साल 2024-25 में स्कूल शिक्षा विभाग के लिए मप्र में 33, 533 करोड़ रुपए का बजट का प्रावधान रखा गया था। इतनी बड़ी राशि बजट में रखने के बाद भी बच्चों की संख्या कम होना चिंताजनक बात है। दरअसल



सरकारी स्कूल से क्यों हो रहा मोह भंग

विधानसभा में स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह ने कांग्रेस विधायक प्रताप सिंह ग्रेवाल के सवाल के जवाब में सदन को यह जानकारी दी है।

स्कूल शिक्षा मंत्री ने सदन में लिखित बताया कि वर्ष 2015-16 में शासकीय विद्यालय में नामांकन 78.96 लाख थे, जो 2024-25 में घटकर 58.17 लाख रह गए। इसी अवधि में निजी विद्यालयों में 2015-16 में 48.84 नामांकन 2024-25 में घटकर 43.93

लाख ही रह गए। वर्ष 2015-16 में शासकीय और निजी विद्यालय को मिलाकर 127.8 लाख बच्चे थे, जो वर्ष 2024-25 में घटकर 102.10 लाख रह गए।

यानी शासकीय एवं निजी विद्यालयों में कक्षा 1 से लेकर 8 वीं तक के 25 लाख 70 हजार से अधिक बच्चे 10 साल में घटे हैं। स्कूलों के प्रवेश में यह गिरावट कक्षा 9 से 12 में भी रही। शासकीय विद्यालयों में वर्ष 2020-21 में 23.94 लाख से घटकर

2024-25 में 21.26 लाख छात्र रह गए और इसमें 2.68 लाख की कमी दर्ज हुई है। वहीं, निजी विद्यालयों में छात्रों की संख्या 13.5 लाख से घटकर 12.85 लाख रह गई है। पिछले पांच सालों में कक्षा 9वीं से 12वीं तक के 2.88 लाख छात्र-छात्राएं घटी हैं। विधायक प्रताप ग्रेवाल ने आरोप लगाया कि बजट भाषण में वित्त मंत्री ने कहा कि प्राथमिक शिक्षा में सकल नामांकन दर 98 प्रतिशत तथा माध्यमिक शिक्षा में 70 प्रतिशत और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा में 67 प्रतिशत से अधिक हो चुकी है।

शासकीय एवं निजी क्षेत्र में 1,25,000 विद्यालय संचालित हैं। जबकि विद्यालय में कम प्रवेश से यह सिद्ध हो रहा है कि प्रदेश में गुणवत्ताहीन शिक्षा के कारण विद्यार्थियों की संख्या में निरंतर चौकाने वाली कमी हो रही है और खर्च लगातार बढ़ रहा है।

बेरोजगारों की फीस से बांटी स्कूटी और लैपटॉप - बेरोजगारों से परीक्षा फीस के रूप में सरकार द्वारा वसूले गए 297 करोड़ रुपए प्राविण्य श्रेणी में आने वाले विद्यार्थियों को स्कूटी एवं लैपटॉप देने में लुटा दिए हैं, जबकि कर्मचारी चयन मंडल के पास जनवरी 2025 को 245.10 करोड़ की फिक्स डिपॉजिट है। उधर, वर्ष 2022 में लोक शिक्षण संचालनालय को राशि देने की वजह से भी बैंक में जमा राशि में कमी आई है। बताया जाता है कि कर्मचारी चयन मंडल ने 2016 से 2024 तक 112 परीक्षाएं आयोजित की थी, जिससे सरकार ने फीस के नाम पर आवेदकों से 1058 करोड़ वसूला था। तत्कालीन व्यापम को 530 करोड़ रुपए मिले थे और इसमें से 297 करोड़ रुपए लोक शिक्षण संचालनालय को बांट दिए गए।

श्रीसांवलिया जी में 17.24 करोड़ रुपयों की गिनती पूरी

तीसरे राउंड में हुई 4.72 करोड़ की काउंटिंग, सोने-चांदी का तोल बाकी

चित्तौड़गढ़ 18 मार्च। मेवाड़ के कृष्णधाम श्रीसांवलिया जी में तीसरे राउंड में 4 करोड़ 72 लाख 75 हजार रुपयों की काउंटिंग हुई है। अब तक 3 राउंड में कुल 17 करोड़ 24 लाख 95 हजार रुपयों की गिनती हो चुकी है। वहीं, भेंट कक्ष में आए मनीऑर्डर, ऑनलाइन रुपयों की गिनती के साथ-साथ सोने चांदी का तोल बाकी है।



मंदिर मंडल के मुख्य कार्यपालक अधिकारी प्रभाव गौतम, नायब तहसीलदार शिव शंकर पारीक और प्रशासनिक अधिकारी नंदकिशोर टेलर की उपस्थिति में की जा रही है।

सोने-चांदी का तोल बाकी - मंदिर के भेंट कक्ष में कई भक्त मनीऑर्डर के जरिए चढ़ावा चढ़ाकर जाते हैं। इसके अलावा काफी रुपए ऑनलाइन के जरिए भी प्राप्त होते हैं। इन सब की काउंटिंग और सोने-चांदी का तोल भी बाकी है। भंडार से निकली राशि के काउंटिंग के बाद ही ऑनलाइन राशि की काउंटिंग होगी।

तीन राउंड की काउंटिंग हुई पूरी - मंडफिया स्थित श्री सांवलिया जी मंदिर में 13 मार्च को पूर्णिमा के दिन भंडार खोला गया था। पहले दिन 7 करोड़ 55 लाख रुपयों की गिनती हुई थी। अगले दिन 14 मार्च धुलंडी और उसके बाद शनिवार, रविवार का दिन होने के कारण सोमवार को दूसरे राउंड की काउंटिंग हुई। दूसरे राउंड की काउंटिंग में 4 करोड़ 97 लाख 20

हजार रुपयों की गिनती हुई। मंगलवार को राजभाग आरती के बाद फिर से काउंटिंग शुरू की गई। शाम तक 4 करोड़ 72 लाख 75 हजार रुपयों की गिनती पूरी की गई। अब तक सांवा सेठ के भंडार से निकली 17 करोड़ 24 लाख 95 हजार रुपयों की गिनती पूरी हो चुकी है। वहीं, चौथे राउंड की गिनती बुधवार सुबह शुरू होगी, जो शाम तक चलेगी। काउंटिंग

ही ऑनलाइन राशि की काउंटिंग होगी। आखिरी दिन ही सोने-चांदी का तोल भी होगा। बता दें कि होली के महोत्सव से पहले आने वाले अमावस्या की चतुर्दशी पर भंडार नहीं खुल जाता है। फूलडोल महोत्सव पर डेढ़ महीने का भंडार खोला जाता है। इसके बाद आने वाले अमावस्या पर 15 दिन का भंडार भी खोला जाएगा।

एमपी में 9 शहरों को मिलाकर बनेंगे 2 मेट्रोपॉलिटन क्षेत्र, 6 संभागों का होगा डेवलपमेंट

भोपाल। मध्यप्रदेश में औद्योगिक विकास और निवेशकों को बढ़ावा देने के साथ-साथ नगरों के सुव्यवस्थित विकास के लिए दो मेट्रोपॉलिटन क्षेत्र बनाने की कवायद शुरू हो गई है। पहला मेट्रोपॉलिटन क्षेत्र इंदौर-उज्जैन-देवास और धार को मिलाकर और दूसरा मेट्रोपॉलिटन क्षेत्र भोपाल-सीहोर, रायसेन-विदिशा-ब्यावरा (राजगढ़) को मिलाकर विकसित किया जाएगा।



मप्र के इन 9 शहरों को मिलाकर बनेगा 2 मेट्रोपॉलिटन क्षेत्र

केंद्र के विजन के मुताबिक राज्य के प्रमुख संभाग मुख्यालय ग्वालियर, सागर, रीवा, जबलपुर, नर्मदापुरम और शहडोल को रीजनल इकोनॉमिक ग्रोथ हब के रूप

में विकसित करने की तैयारी है। सरकार का यह प्रयास अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के साथ-साथ रोजगार, व्यापार और निवेश के नये अवसरों को भी बढ़ावा देने के

लिए किया जा रहा है। सुविधाओं में होगा सुधार - जानकारी के तहत इंदौर मेट्रोपॉलिटन सिटी में इंदौर का 100 प्रतिशत क्षेत्र शामिल किया जाएगा, जबकि टिप्पणी के साथ हाई कोर्ट की और नागदा का भी कुछ हिस्सा इसमें जोड़ा जाएगा। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य औद्योगिक और शहरी विकास को संगठित तरीके से आगे बढ़ाना है, जिससे आधारभूत सुविधाओं में सुधार हो और निवेशकों को आकर्षित किया जा सके।

सरकार की परमिशन के बिना टीचर को नौकरी से नहीं हटा सकते अनुदान प्राप्त स्कूल - एमपी हाईकोर्ट

इंदौर। अनुदान प्राप्त निजी स्कूलों के शिक्षकों को स्कूल प्रबंधन शासन की अनुमति बिना नौकरी से नहीं हटा सकते। इस टिप्पणी के साथ हाई कोर्ट की इंदौर खंडपीठ ने माहेश्वरी हायर सेकेंडरी स्कूल की अपील निरस्त कर दी। मामला जीवविज्ञान संकाय के शिक्षक एसके व्यास का है। नवंबर 1974 में उन्हें स्कूल में उच्च श्रेणी शिक्षक के पद पर नियुक्ति मिली थी। वर्ष 1991 में उन्हें शासन के नियमों के तहत लेक्चरर पद पर पदोन्नति दे दी गई।



नौकरी से हटा दिया था - व्यास को यह पदोन्नति मप्र अशासकीय शिक्षण संस्था

अधिनियम के तहत दी गई थी। वर्ष 2005 में स्कूल ने अचानक व्यास को यह कहते हुए नौकरी से हटा दिया कि स्कूल में कक्षा 11वीं और 12वीं में जीवविज्ञान संकाय में कोई एडमिशन नहीं हुआ है, इसलिए स्कूल को उनकी आवश्यकता नहीं है।

स्कूल प्रबंधन के खिलाफ हाईकोर्ट में अपील की - व्यास ने स्कूल प्रबंधन के खिलाफ हाई कोर्ट में याचिका दायर की। वर्ष

2007 में इसका निराकरण करते हुए कोर्ट ने व्यास को दोबारा नियुक्ति के आदेश दिए, लेकिन स्कूल ने इस फैसले को चुनौती देते हुए हाई कोर्ट में अपील कर दी। न्यायमूर्ति विवेक रूसिया और न्यायमूर्ति गजेंद्रसिंह की युगलपीठ ने स्कूल की अपील को निरस्त कर दिया है। कोर्ट ने कहा कि स्कूल प्रबंधन ने बिना शासन से अनुमति प्राप्त किए शिक्षक को नौकरी से हटाया, यह सही नहीं है।

सीएजी नियुक्ति प्रक्रिया पर बोला सुप्रीम कोर्ट...

हमें अपनी संस्थाओं पर भरोसा रखना होगा - सर्वोच्च न्यायालय

कभी-कभी स्वतंत्रता के बारे में बहुत बड़ी गलतफहमियां होती हैं...

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को उस जनहित याचिका पर केंद्र से जवाब मांगा जिसमें भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (केए) की नियुक्ति केवल कार्यपालिका और प्रधानमंत्री की तरफ से करने के मौजूदा चलन को संविधान का उल्लंघन घोषित किए जाने का अनुरोध किया गया है। जस्टिस सूयकांत और जस्टिस एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) 'सेंटर फॉर पब्लिक इंटररेट लिटिगेशन' की तरफ से दायर

जनहित याचिका पर नोटिस जारी किया। शीर्ष अदालत ने इसी मुद्दे पर लंबित मामलों के साथ संलग्न कर दिया। एनजीओ की ओर से पेश हुए वकील प्रशांत भूषण ने कहा कि सवाल संस्था की स्वतंत्रता का है। उन्होंने आरोप लगाया कि महाराष्ट्र जैसे राज्यों, जहां बीजेपी सत्ता में है, में कैग के ऑडिट को बाधित किया जा रहा है। जनहित याचिका में शीर्ष अदालत से यह निर्देश देने का भी अनुरोध किया गया है कि राष्ट्रपति कैग की नियुक्ति प्रधानमंत्री, विपक्ष के नेता और भारत के चीफ

जस्टिस वाली एक स्वतंत्र और तटस्थ चयन समिति के परामर्श से तथा पारदर्शी तरीके से करें। इसमें कहा गया है कि कैग की नियुक्ति का निर्देश सूचना आयोगों और केंद्रीय सतर्कता आयोग सहित अन्य निकायों की नियुक्ति के समान होना चाहिए। जब जस्टिस सूर्यकांत ने 'डेविपरशन' के बारे में सवाल किया, तो भूषण ने कम रिपोर्ट और रुके हुए ऑडिट की ओर इशारा किया। फिर कोर्ट ने संविधान के अनुच्छेद 148 की ओर इशारा किया, जिसमें कहा गया है कि राष्ट्रपति सीएजी को 'अपने

हस्ताक्षर और मुहर के तहत वारंट द्वारा' नियुक्त करेंगे। एडवोकेट भूषण ने बताया कि कोर्ट ने सीबीआई प्रमुख की नियुक्ति और मुख्य चुनाव आयुक्त की नियुक्ति के मामले में भी हस्तक्षेप किया था। जस्टिस कांत ने तब कहा कि हमें अपनी संस्थाओं पर भरोसा करना होगा। बहुत बड़ी गलतफहमियां होती हैं - बैंच में शामिल जस्टिस एन कोटिश्वर सिंह ने कहा, 'कभी-कभी हमें स्वतंत्रता के बारे में बहुत बड़ी गलतफहमियां होती हैं। भूषण ने चुनाव आयोग मामले में शीर्ष अदालत के फैसले

की ओर इशारा किया, जिसमें कहा गया था कि चुनाव निकाय के सदस्यों की नियुक्ति करने वाले पैनल में प्रधानमंत्री, विपक्ष के नेता और भारत के चीफ जस्टिस शामिल होने चाहिए। अदालत ने तर्क दिया था कि पैनल की संरचना को कार्यपालिका पर छोड़ना लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होगा। बाद में केंद्र ने नियमों में फेरबदल करते हुए भारत के चीफ जस्टिस को पैनल से हटा दिया और एक मंत्री को जोड़ दिया। अदालत अब इस कदम को लेकर चुनौतियों की सुनवाई कर रही है।

अहमदाबाद में बंद फ्लैट से 95.5 किलो सोना जप्त

एटीएस और डीआरआई ने स्टॉक मार्केट ऑपरेटर के फ्लैट और बंगले पर छापा मारा

अहमदाबाद। पालडी इलाके में आविष्कार अपार्टमेंट के एक बंद फ्लैट पर एटीएस और डीआरआई ने सोमवार को छापा मारा। इस दौरान स्टॉक मार्केट संचालक के बंद फ्लैट से 95.5 किलो सोना और 60 लाख रुपए की नकदी जप्त की। दोनों एजेंसियों ने पूर्व सूचना के आधार पर छापेमारी की कार्रवाई की। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार यह फ्लैट मेघ शाह और महेंद्र शाह का है। दोनों स्टॉक मार्केट ऑपरेटर हैं। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार गुजरात एटीएस और डीआरआई की टीम ने अहमदाबाद शहर के पालडी स्थित आविष्कार



अपार्टमेंट और पास के एक बंगले पर छापा मारा। गुजरात एटीएस के एक अधिकारी से मिली जानकारी के अनुसार, हमें आज सूचना मिली जिसके आधार पर केंद्रीय एजेंसी के सहयोग से छापेमारी की गई।

अधिकारियों को पड़ोसियों ने बताया कि इस बंद फ्लैट में भी कुछ दिनों से कई लोगों का आना-जाना लगा हुआ था। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार यह फ्लैट मेघ शाह और महेंद्र शाह का है। एजेंसियों फिलहाल आगे की जांच कर रही हैं।

स्वच्छ भारत
सुदूर भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

नगर परिषद डीकेन सर्वेक्षण

2024-25

स्वच्छ

ग्रीन डीकेन
क्लीन डीकेन

हर घर में शौचालय

नगर परिषद डीकेन

स्वच्छता अपनाएँ
गन्दगी दूर भगाएँ।

स्वच्छ भारत मिशन

स्वच्छता अपनाएँ
गन्दगी दूर भगाएँ।

स्वच्छ भारत मिशन

स्वच्छता अपनाएँ
गन्दगी दूर भगाएँ।

स्वच्छता अपनाएँ
गन्दगी दूर भगाएँ।

स्वच्छ भारत मिशन

स्वच्छता अपनाएँ
गन्दगी दूर भगाएँ।

स्वच्छता अपनाएँ
गन्दगी दूर भगाएँ।

स्वच्छ भारत मिशन

स्वच्छता अपनाएँ
गन्दगी दूर भगाएँ।

स्वच्छता अपनाएँ
गन्दगी दूर भगाएँ।

स्वच्छ भारत मिशन

स्वच्छता अपनाएँ
गन्दगी दूर भगाएँ।

स्वच्छता अपनाएँ
गन्दगी दूर भगाएँ।

स्वच्छ भारत मिशन

स्वच्छता अपनाएँ
गन्दगी दूर भगाएँ।

आज ही बुक करें अपना **Zelo** इलेक्ट्रिक स्कूटर, घर ले जाए

मात्र रु ~~45990/-~~ रु **42000/-**

में वो भी 1 साल की बैटरी वारंटी के साथ

मात्र रु **42000/-** से इलेक्ट्रिक स्कूटर की रेंज से शुरू ...

RTO मॉडल मात्र

रु ~~81000/-~~ रु **76000/-***

(माइलेज 80-100 कि.मी.) 3 साल बैटरी की वारंटी के साथ, आज ही बुक करवाए और पाए एक सोने का सिक्का।

Zelo Electric Scooter

बंगला नं. 23, IDBI बैंक के सामने,
Lic रोड़, नीमच (म.प्र.)
मो. 940742399, 8770664866